फूलों की उम्मीद

ट्रिना पौलोस

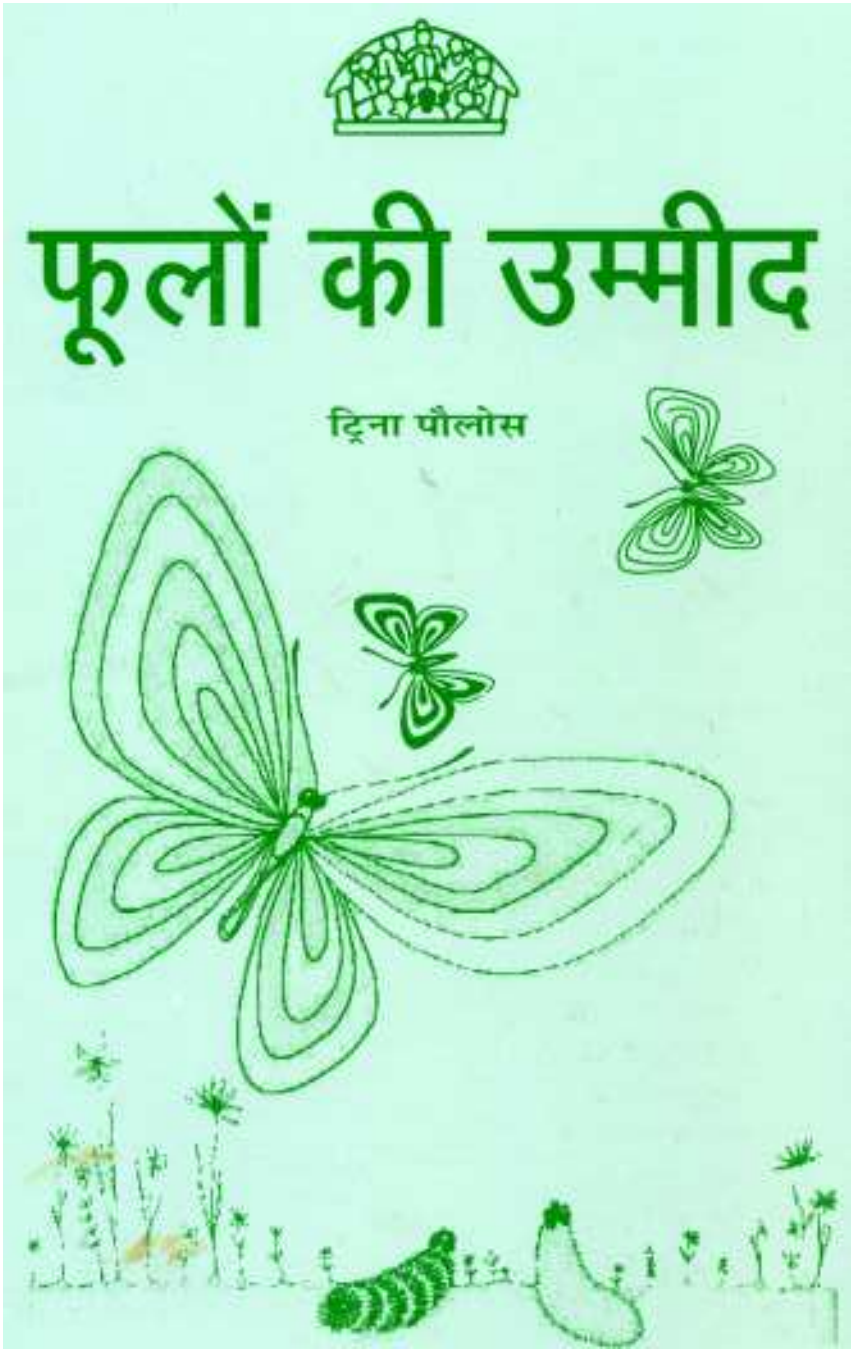

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

फूलों की उम्मीद : ट्रिना पौलोस
HOPE FOR THE FLOWERS : TRINA PAULUS
अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

पांचवां संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket, New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Abhinav Prints, Delhi - 110034

फूलों की उम्मीद

ट्रिना पौलोस

फूलों की उम्मीद

बहुत पुरानी बात है। एक छोटा, धारियों वाला कैटरपिलर (इल्ली) अपने अंडे को फोड़ कर बाहर निकला। उसके शरीर पर पट्टियां थीं। तभी उसका नाम पड़ा पट्टू। ''नमस्ते,'' उसने आसपास के लोगों से कहा, ''यहां की धूप वाकई में चमकीली है।''

''मुझे बड़े ज़ोर की भूख लगी है,'' उसने सोचा। वो उसी पत्ती को खाने लगा जिस पर वो पैदा हुआ था। फिर उसने एक और पत्ती खाई.... एक और....फिर एक और। फिर वो मोटा...और मोटा...और बड़ा होता गया।

फिर एक दिन ऐसा आया कि उसने खाना बंद कर दिया और सोचने लगा, ''ज़िंदगी का खाने और मोटे होने के अलावा भी और कुछ मतलब होगा।''

''अब मुझे यहां कुछ खास मज़ा नहीं आ रहा है। इसलिए वो उस पेड़ से नीचे उतरा जिसकी छांव में वो

पैदा हुआ था और जिसकी पत्तियां वो खा रहा था।

उसे नई–नई चीज़ें देखने में बड़ा मज़ा आ रहा था। घास और धूल के कण, छोटे गड्ढे और नन्हे कीड़े उसे अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। परंतु किसी भी चीज़ से उसकी तृप्ति नहीं हो रही थी। जब उसे अपने जैसे ही कुछ रेंगने वाले जीव मिले तो पहले तो वो बहुत खुश हुआ। परंतु वे सब

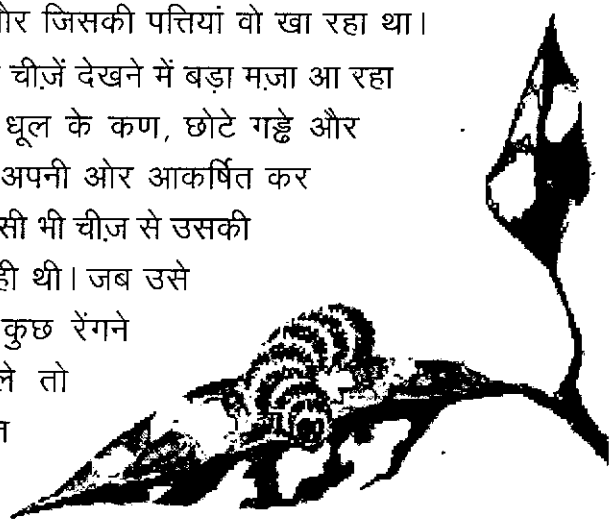

खाने में इतने व्यस्त थे कि उनमें से किसी के पास बात करने का समय ही नहीं था।

''ज़िंदगी के बारे में जितना मैं जानता हूं ये भी उतना ही जानते हैं,'' उसने गहरी सांस लेते हुए कहा।

फिर एक दिन पट्टू को अपने जैसे ही बहुत सारे जीव रेंगते हुए दिखाई दिए।

उसने देखा कि वे सभी के सभी एक ऊंची मीनार पर चढ़ रहे थे।

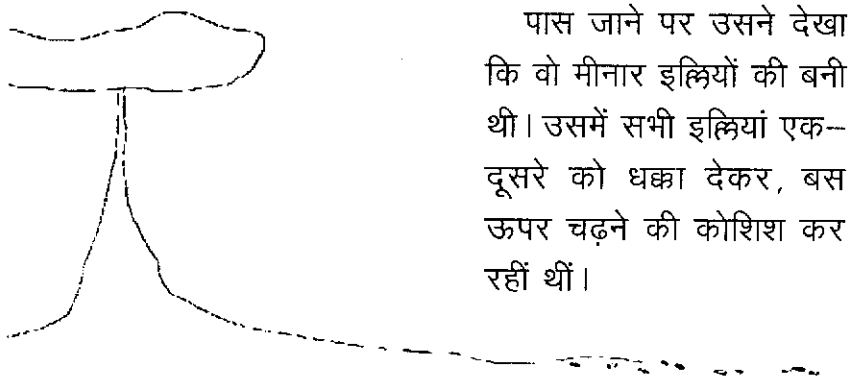

पास जाने पर उसने देखा कि वो मीनार इल्लियों की बनी थी। उसमें सभी इल्लियां एक–दूसरे को धक्का देकर, बस ऊपर चढ़ने की कोशिश कर रहीं थीं।

मीनार में बस इल्लियां ही इल्लियां थीं।

ऐसा लगता था जैसे सभी इल्लियां ऊपर की चोटी तक पहुंचना चाहती हैं। परंतु ऊपर की चोटी आसमान के बादलों में खो गई थी।

ऊपर क्या है? यह पट्टू को दिखाई नहीं दे रहा था। वो काफी उत्तेजित हुआ। उसकी रगों में नया खून दौड़ने लगा। ''जिसकी मुझे सारे जीवन भर खोज थी, वो अब मुझे मिल गया है।'' उसने एक रेंगने वाले साथी से पूछा, ''यहां क्या हो रहा है? क्या तुम्हें कुछ पता है?''

''मैं तो खुद अभी–अभी आया हूं,'' उसने उत्तर दिया।

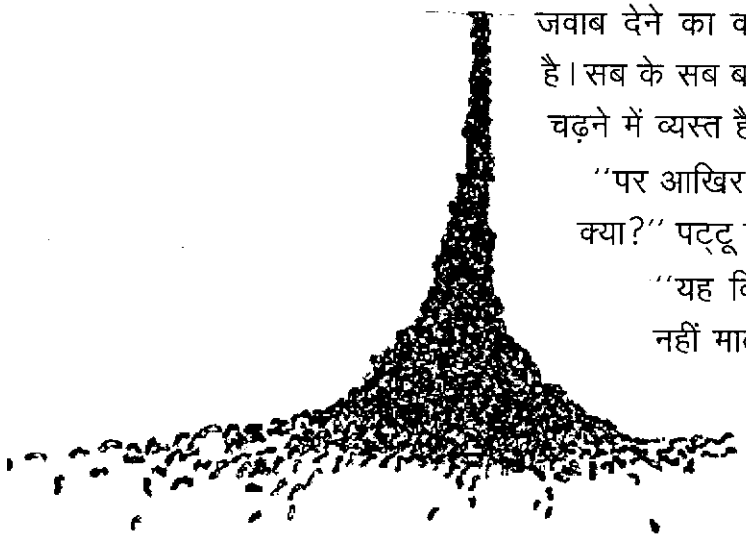

''यहां किसी के पास जवाब देने का वक्त नहीं है। सब के सब बस ऊपर चढ़ने में व्यस्त हैं।''

''पर आखिर ऊपर है क्या?'' पट्टू ने पूछा।

''यह किसी को नहीं मालूम। पर ऊपर

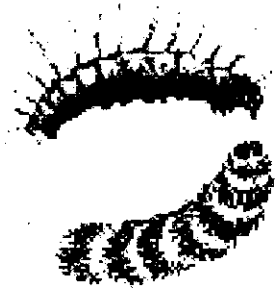

ज़रूर कोई बेहद अच्छी चीज़ होगी, तभी तो सभी लोग उस तरफ दौड़ रहे हैं। अच्छा अलविदा,.अब मैं चलता हूं! मेरे पास ज़्यादा वक्त नहीं है।''

यह कह कर वो कीड़ा भी भीड़ में कूद पड़ा। पट्टू के दिमाग में खलबली मच गई। हरेक सेकेंड, एक नई इल्ली उसके सामने से गुज़रती और झट से इल्लियों की मीनार में गायब हो जाती।

''अब करने को बचा ही क्या है,'' यह कह कर पट्टू भी भीड़ में कूद पड़ा।

इल्लियों के इस पुलिंदे में उसे पहले तो एक भारी झटका लगा। पट्टू पर हर ओर से, लातों और घूसों की बौछार पड़ी। यहां का नियम एकदम सरल था। या तो खुद ऊपर चढ़ो, नहीं तो औरों को ऊपर चढ़ने दो .....।

यहां पट्टू का कोई दोस्त न था। वो दूसरों पर पैर रखकर ही ऊपर

चढ़ सकता था। वो बेरहमी से रौंदता–कुचलता ऊपर बढ़ने लगा।

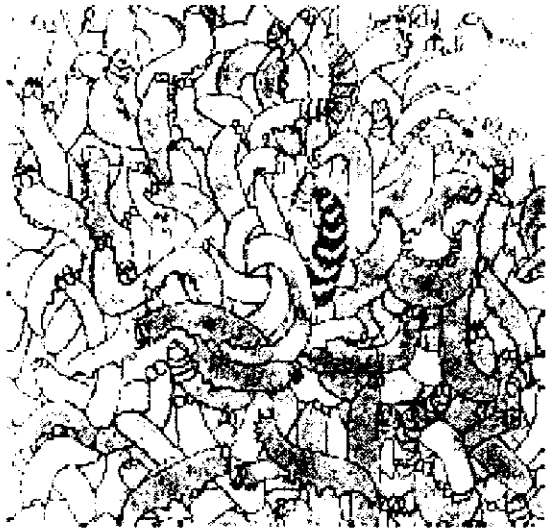

धीरे–धीरे वो काफी ऊपर चढ़ गया। किसी–किसी दिन तो वो एक ही स्थान पर अटका रहता – न ऊपर जा पाता और न ही नीचे। ऐसी स्थिति में अक्सर उसके अंदर एक आवाज़ उठती, ''आखिर ऊपर है क्या?'' या ''हम कहां जा रहे हैं?''

एक दिन पट्टू से नहीं रहा गया और वो हताश होकर चिल्ला पड़ा, ''मेरे पास इन सवालों का कोई उत्तर नहीं है। और न ही उनके बारे में सोचने के लिए मेरे पास समय है!''

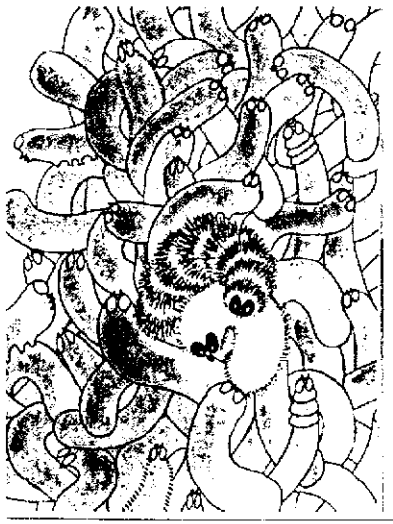

तभी पास खड़ी पीलू नाम की एक पीली इल्ली ने पूछा, ''क्या कहा तुमने?''

''मैं तो बस अपने ही आप से बातें कर रहा था,'' पट्टू ने कहा।

''नहीं, मैं बस सोच रहा था कि आखिर हम कहां जा रहे हैं?''

''क्या तुम्हें पता है?'' पीलू ने पूछा, ''मेरे दिमाग में भी यही सवाल घूम रहा था।''

पीलू ने शर्माते हुए आगे कहा, ''यहां किसी को इस बात की परवाह नहीं है कि वे कहां जा रहे हैं। पर यह बताओ, हम अभी चोटी से कितनी दूर हैं?''

पट्टू ने गंभीर आवाज़ में जवाब दिया, ''क्योंकि हम चोटी पर नहीं पहुंचे हैं और न ही एकदम नीचे हैं, इसलिए हम ज़रूर कहीं न कहीं बीच में होंगे।''

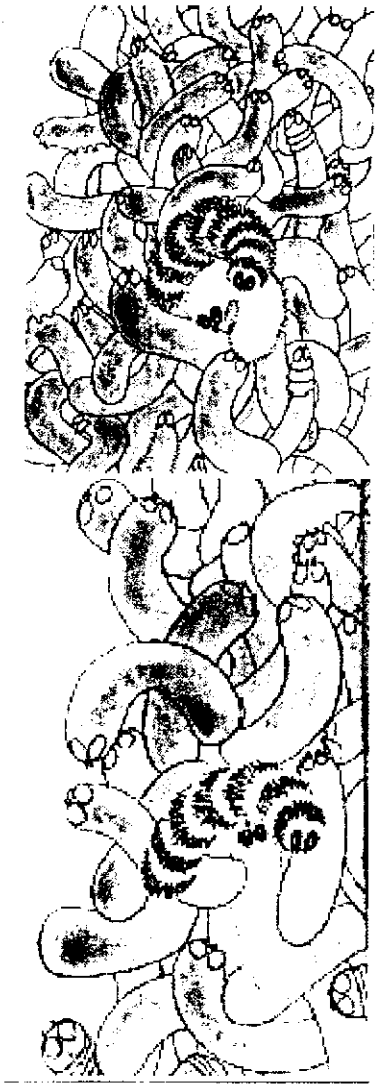

''ठीक है,'' पीलू ने कहा।

फिर दोनों ने दुबारा ऊपर की ओर चढ़ाई शुरू कर दी।

उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वो जिस लगन और एकाग्रता से प्रयास कर रहा था उस कोशिश में कुछ ढील आई थी।

''जिससे मैंने अभी–अभी बातें की हों, उसे भला मैं कैसे अपने पैरों से कुचल सकता हूं?'' वो सोचने लगा।

पट्टू हमेशा पीलू से बच–बच कर चलता। पर एक दिन उसने पीलू को ठीक अपने रास्ते के बीच में खड़ा हुआ पाया।

''या तुम ऊपर जा सकती हो, या मैं,'' उसने कहा और वो झट से पीलू के सिर पर पैर रखकर कूद गया।

पीलू ने उसे देखकर कुछ इस प्रकार मुंह बनाया जिसे देख पट्टू

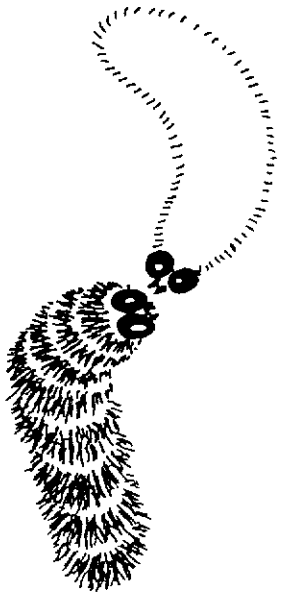

घबरा गया। जैसे कि पीलू ने उससे कहा हो, ''चाहें चोटी पर कुछ भी हो – पर इस तरह का बर्ताव किसी भी हालत में ठीक नहीं।''

पट्टू कुछ देर बाद पीलू के पास रेंगता हुआ गया और उसने कहा, ''मैं अपनी गलती के लिए माफी चाहता हूं।''

फिर पीलू रोने लगी: ''जिस दिन मैंने तुम्हें बातें करते हुए सुना, उससे पहले मैं एक अच्छी खासी ज़िंदगी जी रही थी। पर उस दिन मुझे कुछ हो गया। अब मेरा मन इस सब में नहीं लगता है। मैं इस ज़िंदगी से तंग आ चुकी हूं। मैं बस एकांत में, तुम्हारे साथ–साथ रेंगना चाहती हूं और घास चबाना चाहती हूं।''

यह सुनकर पट्टू का दिल उछलने लगा।

उसे हरेक चीज़ अलग लगने लगी।

''मैं भी यही चाहता हूं,'' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

इस निर्णय के बाद उसने ऊपर की चढ़ाई बंद करनी थी। यह करना उसके लिए एक कठिन काम था।

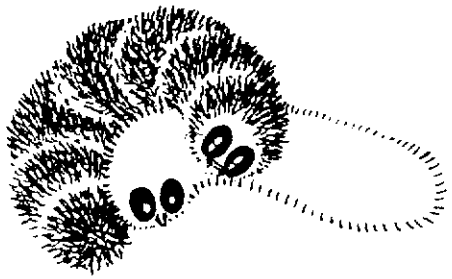

''प्रिय पीलू! हम लोग अब चोटी के काफी पास हैं। एक–दूसरे की मदद से हम चाहें तो जल्दी से ऊपर पहुंच सकते हैं।''

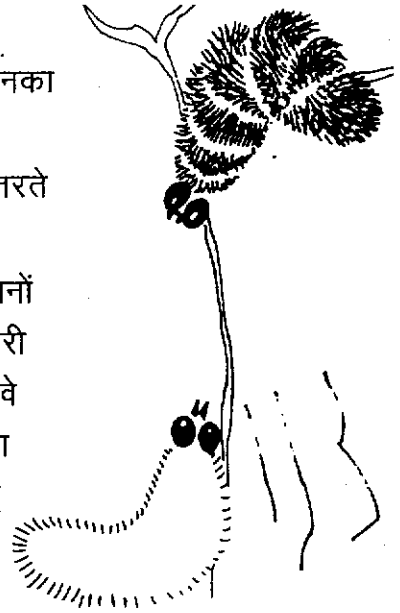

''शायद हां,'' पीलू ने कहा।

परंतु चोटी पर पहुंचना अब उनका लक्ष्य नहीं रह गया था।

''चलो, हम लोग अब नीचे उतरते हैं,'' पीलू ने कहा।

''अच्छा,'' पट्टू ने कहा। अब दोनों ने नीचे उतरना शुरू किया। जब दूसरी इल्लियां उन पर रेंगने लगीं तो वे एक–दूसरे से लिपट गए। वहां का माहौल कोई अच्छा नहीं था परंतु वे एक–दूसरे के साथ खुश थे। दोनों के लिपटने से एक गेंद जैसी बन गई थी। अब वो दूसरों की लातों और घूसों से अपनी आंखों और पेट को बचा सकते थे।

उन दोनों ने एक लंबे अर्से तक कुछ नहीं किया। अचानक उन्हें अपने आसपास कोई भी इल्ली महसूस नहीं हुई। जब उन्होंने अपनी आंखें खोलीं तो वो दोनों मीनार की तली में एक कोने में पड़े थे।

फिर वो रेंगते हुए हरी घास के एक झुरमुटे में सोने को चल दिए।

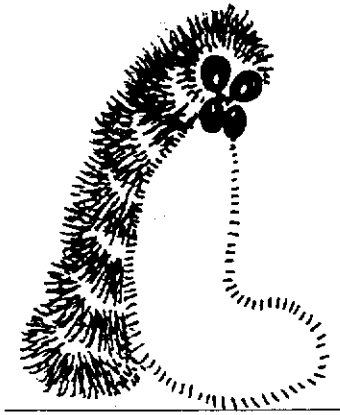

सोने से पहले वो एक–दूसरे सक लिपट गए।

''उस भीड़ में कुचले जाने से तो यही बेहतर है।''

''इसमें कोई शक नहीं!''

दोनों की आंखें बंद थीं और उनके चेहरे पर मुस्कुराहट थी।

फिर पट्टू और पीलू ने हरी घास पर खूब मौज–मस्ती की। उन्होंने जम कर खाया–पिया और एक–दूसरे को खूब प्यार किया। वे खुश थे – अब उन्हें हर समय दूसरों से लड़ना–झगड़ना नहीं पड़ता था।

कुछ समय तक तो यह स्वर्ग जैसा माहौल बना रहा। पर समय बीतने के साथ एक–दूसरे का आलिंगन भी थोड़ा उबाऊ लगने लगा। वे एक–दूसरे के एक–एक बाल से परिचित हो चुके थे। पट्टू अब सोचने लगा, ''जीवन में इसके आगे भी कुछ होगा?''

पीलू ने पट्टू को खुश करने की बहुत कोशिश की परंतु, उसकी बेचैनी और अशांति बढ़ती ही गई। ''देखो जिस गंदी ज़िंदगी को हम छोड़कर आए उससे यह ज़िंदगी कितनी अधिक सुखद और अच्छी है,'' पीलू ने कहा।

''हमें अभी भी यह नहीं मालूम कि मीनार की चोटी के ऊपर क्या है?'' पट्टू ने कहा।

''नीचे उतर कर शायद हमने गलती की। अब आराम करने के बाद हम दोनों एक–साथ दुबारा चोटी के ऊपर पहुंच सकते हैं।''

''पट्टू मुझ से यह नहीं होगा,'' पीलू ने विनती की, ''हम लोगों का

एक अच्छा–भला घर है। हम दोनों एक–दूसरे से प्यार करते हैं। मेरे लिए तो इतना ही बहुत है।''

पीलू ने अपना मन पक्का कर लिया था। कुछ दिनो तक तो पट्टू चुप रहा। परंतु धीरे–धीरे मीनार पर चढ़ने की उसकी ललक बढ़ती गई। वो रोज़ इल्लियों की मीनार के पास जाता और उसे घंटों टकटकी लगाए निहारता रहता। परंतु मीनार की चोटी हमेशा बादलों में छिपी रहती।

एक दिन मीनार में तीन धमाके हुए। उनसे पट्टू कुछ हिल गया। तीन मोटी–मोटी इल्लियां ''धम्म!'' से ऊपर से गिर कर कुचल गईं।

उनमें से दो तो तुरंत मर गईं। परंतु एक अभी भी ज़िंदा थी। पट्टू ने पूछा, ''क्या हुआ? क्या मैं कुछ मदद कर सकता हूं?''

वो इल्ली मुश्किल से कुछ ही शब्द बोल पाई ''ऊपर चोटी पर.... वही दे खें गी ....के व ल तितलियां.....।'' इतना कह कर वो इल्ली भी चल बसी।

पट्टू रेंगते हुए घर आया और उसने यह बात पीलू को बताई। दोनों काफी देर तक गुमसुम बैठे रहे। इस रहस्यमय संदेश का क्या मतलब हो सकता है? क्या वे इल्लियां मीनार की चोटी से गिरी थीं?

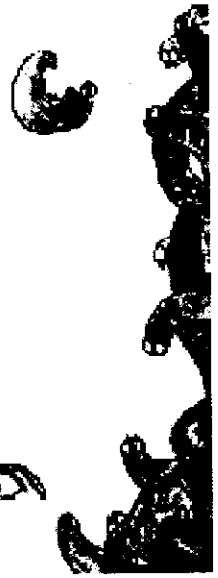

अंत में पट्टू ने कहा: ''मुझे इस राज़ का पता लगाना ही होगा। मैं चोटी पर पहुंच कर इस रहस्य का पता लगाऊंगा।''

फिर उसने हल्की सी आवाज़ में पीलू से पूछा, ''क्या तुम मेरे साथ चल कर मेरी मदद करोगी?''

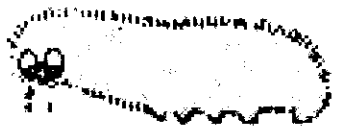

पीलू के अंदर लड़ाई छिड़ी थी। वो दो मन में थी। परंतु उसके मन में एक शंका भी थी। इतने संघर्ष के बाद मीनार पर चढ़ने के बाद शायद चोटी पर कुछ भी न हो!!

वो भी ''ऊपर'' चढ़ना चाहती थी। रेंगने की ज़िंदगी से वो भी तंग आ चुकी थी। पट्टू अपनी बात पर डटा रहा।

''गलत काम करने से तो कुछ नहीं करना, ही अच्छा है,'' पीलू ने सोचा। पर पीलू अपनी बात को शायद ठीक तरह से समझा नहीं पाई।

वो न ही अपने सोच से संबंधित कोई ठोस सबूत दे पाई। परंतु वो पट्टू के साथ नहीं गई। उसे लगा – दूसरों को रौंद कर ऊपर चढ़ना गलत बात है।

''नहीं,'' उसने भारी मन से कहा और पट्टू अकेले ही मीनार पर चढ़ने निकला।

पट्टू कि बिना पीलू अपने आपको बहुत अकेला महसूस करती। वो रोज़ पट्टू को देखने के लिए इल्लियों की मीनार तक जाती और दुखी होकर शाम को वापिस लौटती। अंत में वो इस अनिश्चितता और इंतज़ार से तंग आ गई।

''मैं आखिर इस दुनिया से क्या चाहती हूं?'' वो अपने सोच में इधर–उधर भटकने लगी। एक दिन उसे पेड़ की टहनी से सिलेटी रंग की एक इल्ली लटकी हुई दिखाई दी।

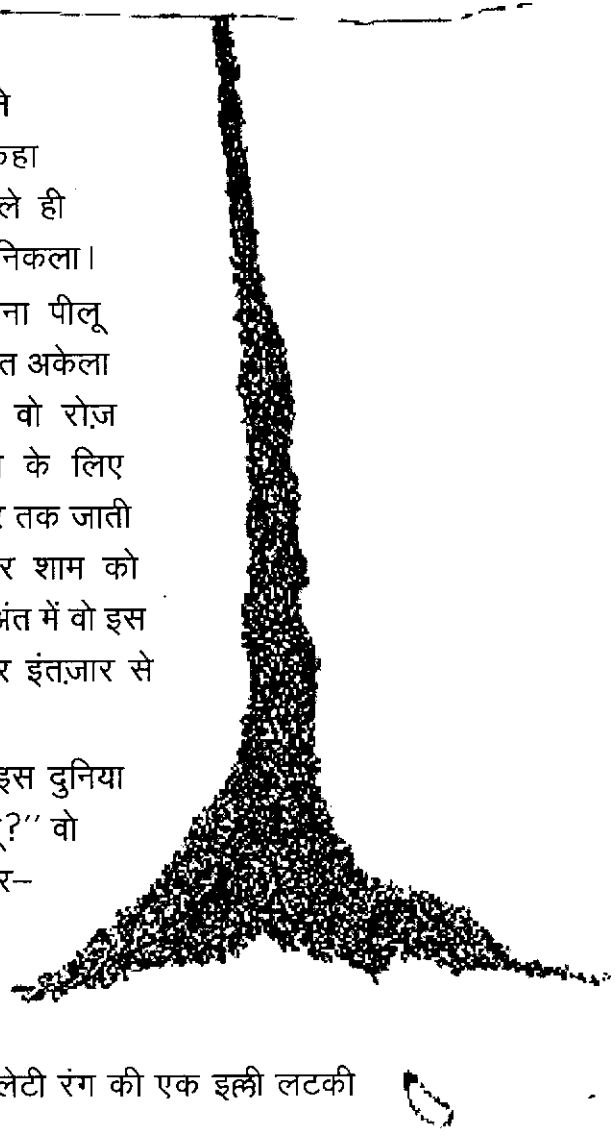

उसे यह देख कर काफी आश्चर्य हुआ। उसे लगा जैसे वो इल्ली किसी रोएंदार चीज़ में फंस गई थी।

''क्या तुम्हें कुछ तकलीफ है? क्या मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकती हूं?'' पीलू ने पूछा।

''नहीं, इसकी कोई ज़रूरत नहीं । तितली बनने के लिए मुझे यह करना ही पड़ेगा,'' जवाब मिला।

पीलू का मन उछलने लगा।

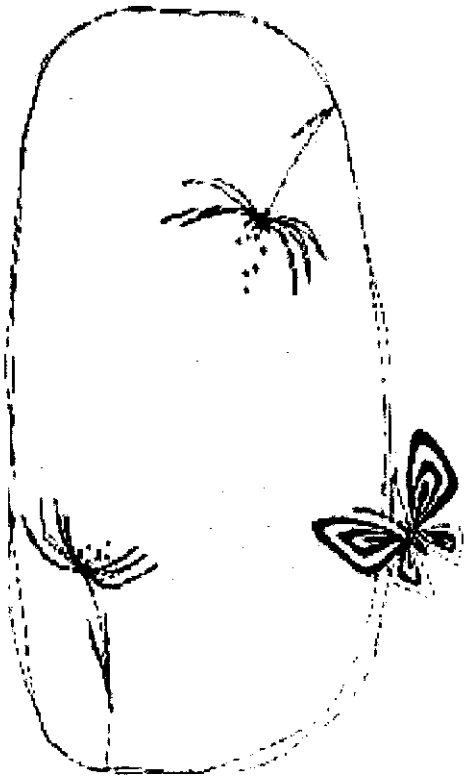

''तितली? यह तितली क्या होती है?'' उसने उत्सुकता से पूछा।

''तुम्हें तितली ही तो बनना है। तितली अपने सुंदर पंखों को पसार कर पृथ्वी को आकाश से जोड़ती है। वो केवल फूलों का रस पीती है और प्यार के बीज एक फूल से दूसरे फूल तक पहुंचाती है। तितलियां न होंगी तो दुनिया में बहुत कम फूल रह जाएंगे।''

''क्या यह सच हो सकता है?'' पीलू सोचने लगी।

''मैं यह कैसे मान लूं कि मेरे अंदर एक तितली है? बाहर से तो मैं एक रोएंदार कीड़ा ही दिखाई देती हूं। कोई इल्ली तितली कैसे बनती है?'' उसने चिंता की मुद्रा में पूछा।

''बस तुम्हारे मन में उड़ने की तेज़ ललक होनी चाहिए। फिर तुम अपने आप एक दिन इल्ली जैसे रेंगना छोड़ दोगी।''

''अगर मैं तितली बनना चाहूं तो इसके लिए मुझे क्या करना होगा?'' पीलू ने पूछा।

''मुझे देखो, मैं अपने लिए एक रोएंदार घर (कोवा) बुन रही हूं। इस घर के अंदर मुझ में अद्‌भुत परिवर्तन होंगे। इस बदल के दौरान, देखने वालों को ऐसा लगेगा जैसे कुछ हो ही नहीं रहा है। परंतु मेरे अंदर एक खूबसूरत तितली आकार ले रही होगी।''

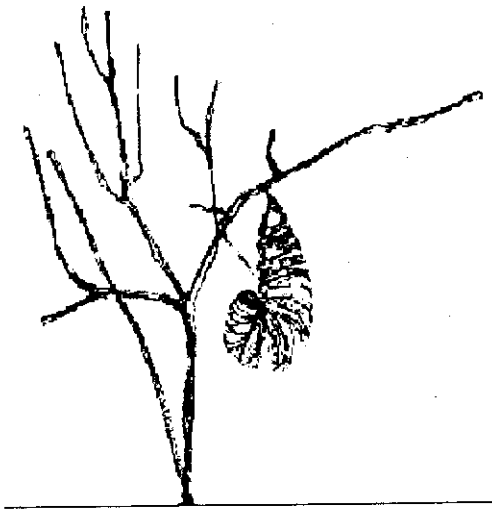

''हां, एक और ज़रूरी बात है। तितली बनकर ही तुम सचमुच का प्यार कर सकोगी – ऐसा प्रेम

जो एक नई ज़िंदगी को जन्म दे पाएगा। इल्लियों के आलिंगन से यह कहीं बेहतर होता है।''

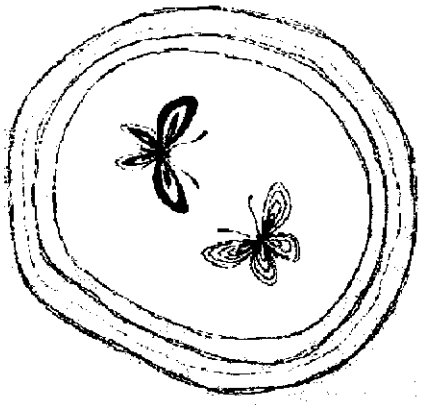

''चलो, मैं अब जाकर पट्टू को खोजती हूं,'' पीलू ने कहा। वो दुखी थी। इल्लियों की मीनार में उसे खोज पाना बहुत मुश्किल काम था।

''तुम दुखी मत हो,'' उसकी नई मित्र ने कहा, ''तितली बनकर तुम उड़ सकती हो और अपने प्रेमी को तितलियों की सुंदरता दिखा सकती हो। तब हो सकता है, वो भी वैसा ही बनना चाहे।''

पीलू फिर चिंता में फंस गई: ''अगर पट्टू वापिस आया और मैं नहीं मिली, तो? अगर उसने मेरा बदला हुआ रूप नहीं पहचाना, तो? अगर उसने इल्ली ही बने रहने का निर्णय लिया, तो? इल्ली के रूप में हम कम–से–कम कुछ थोड़ा बहुत तो कर ही सकते हैं – जैसे रेंगना और खाना। हम थोड़ा–बहुत प्यार भी कर सकते हैं। परंतु दो कोवे (ककून) आपस में क्या कर सकते हैं? इस रोएंदार घर के रेशमी जाल में फंसना ठीक नहीं है।''

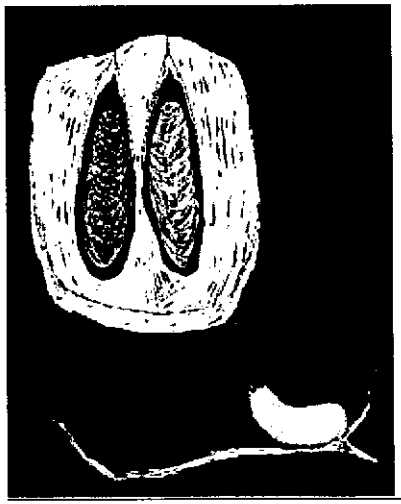

पीलू ने अभी तक एक रोएंदार कीड़े की ज़िंदगी ही जी थी। उसे वो कैसे छोड़ दे? क्या पता कि वो कभी सुंदर पंखों वाली तितली

बनेगी भी या नहीं? वो किसी ऐरा–गैरा इल्ली की बात पर कैसे यकीन कर ले?

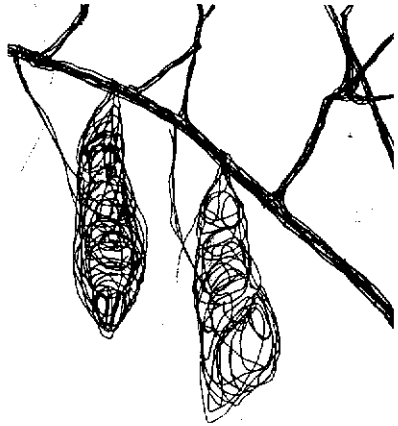

सिलेटी रोएं वाली इल्ली ने अब खुद को रेशम के धागों में लपेटना शुरू कर दिया था। सिर के चारों ओर आखिरी रेशे बुनते हुए उसने कहा, ''तुम एक दिन खूबसूरत तितली बनोगी – हम सभी तुम्हारा इंतज़ार कर रहे हैं।''

पीलू ने अंत में तितली बनने की ठानी। सहारे के लिए वो पहले वाले कोवे (ककून) के बिल्कुल पास जाकर लटक गई। वहां पर वो रेशमीन धागों का घर बुनने लगी।

''कल्पना करो! मुझे यह तक नहीं पता था कि मैं ऐसा भी कर सकती हूं। लगता है कि मैं सही रास्ते पर चल रही हूं। अगर मैं रेशम के धागे बुन सकती हूं तो शायद मुझमें तितली बनने की क्षमता भी होगी?''

पट्टू ने इस बार बड़ी तेज़ी से प्रगति करी। इस बार वो एकदम हट्टा–कट्टा और ताकतवर था। शुरू से ही उसने चोटी के ऊपर पहुंचने का पक्का इरादा बना लिया था। वो अब बाकी इल्लियों से आंख भी नहीं मिलाता था। ऐसा संपर्क घातक

हो सकता था, इसका उसे अब अनुभव था। उसने पीलू के बारे में भी न सोचने की कसम खाई। भावनाएं अब उसके मुहिम में बाधा नहीं बनेंगी।

बिना शर्म–लिहाज़ के, वो औरों को रौंदता हुआ ऊपर चढ़ने लगा। चढ़ने वालों में वो अब सबसे आगे था। उसे इसमें कोई गल्ती नहीं लग रही थी। वो वही कर रहा था जो उसे मीनार की चोटी पर पहुंचने के लिए करना चाहिए था। परंतु चोटी तक पहुंचते–पहुंचते वो एकदम पस्त हो चुका था। इस ऊंचाई पर हिलना–डुलना एकदम कम था। यहां पर मंझे हुए खिलाड़ी थे।

वे अपने–अपने अड्डे बना कर बैठे थे। यहां हर चाल महत्वपूर्ण थी। छोटी सी गलती भी घातक सिद्ध हो सकती थी। एक दिन ऊपर की इल्ली को पट्टू ने यह कहते हुए सुना : ''दूसरों को गिराए बिना हम ऊपर नहीं चढ़ सकते हैं।''

कुछ देर के बाद एक ज़ोर का हलाचला आया। फिर चीखने–चिल्लाने और कुछ इल्लियों के गिरने की आवाज़ें आईं। उसके बाद सन्नाटा छा गया। ऊपर से रोशनी की किरणें आने लगीं। भार भी थोड़ा कम हो गया। अब उसे मीनार का रहस्य समझ में आ रहा था। उन तीन इल्लियों को क्या हुआ? यह अब उसे समझ में आया।

मीनार पर शायद हमेशा ही ऐसा ही होता है।

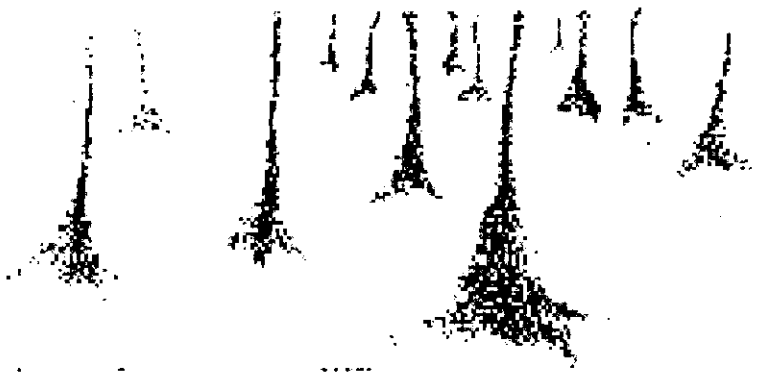

पट्टू के चेहरे पर अब निराशा का भाव था। पर वो ऊपर चढ़ रहा था। उसे ऊपर से एक हल्की सी आवाज़ सुनाई पड़ी, ''ऊपर तो कुछ भी नहीं है!!!''

''हल्के बोल गधे, नहीं तो तेरी आवाज़ नीचे तक पहुंच जाएगी। हम अब वहां हैं, जहां नीचे वाले पहुंचना चाहते हैं,'' किसी और ने कहा।

पट्टू को जैसे लकवा मार गया हो। इतने ऊंचे पहुंचने से भी क्या लाभ! ऊंचाई बस नीचे से ही अच्छी लगती है। इस ऊंचाई से उसे और बहुत सारी इल्लियों की मीनारें दिखाई दीं। उसे बेहद गुस्सा आया।

''इन हज़ारों–लाखों मीनारों में मेरी एक छोटी सी मीनार! ये लाखों–करोड़ों इल्लियां न जाने कहां चढ़ रही हैं! यह एक भयानक भूल है!''

पीलू के साथ बिताई ज़िंदगी अब काफी धुंधली हो चली थी।

''पीलू,'' उसने उसकी याद को अपनी स्मृति में तरोताज़ा किया।

''पीलू ने ठीक ही तो कहा था। काश मैं अभी उसके पास होता,'' वो सोचने लगा।

परंतु पट्टू के आसपास खलबली मची थी। हरेक इल्ली ऊपर पहुंचने की कोशिश में थी। तभी एक इल्ली ने कहा, ''हम सब को

मिलकर एक ज़ोर का धक्का देना चाहिए। तभी शायद हम ऊपर पहुंच पाएं।'' इसी घमासान संघर्ष के दौरान एक पीले रंग की तितली, मीनार का चक्कर लगा रही थी। तितली का मुक्त होकर उड़ना एक बेहद सुंदर नज़ारा था! वो बिना दूसरों के सिरों को कुचले इतना ऊपर कैसे उड़ पाई? जब पट्टू ने अपना सिर बाहर निकाला तो ऐसा

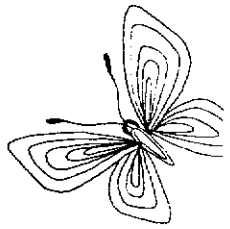

लगा जैसे तितली ने उसे पहचान लिया हो। तितली ने अपने पैर बढ़ा कर पट्टू को खींचने की कोशिश की परंतु पट्टू ने बड़ी मुश्किल से अपने आपको उसके चंगुल से छुड़ाया। उस सुंदर तितली ने दुखी भाव से पट्टू की आंखों में झांका। इसका पट्टू पर गहरा असर हुआ। अतीत के शब्द उसे याद आने लगे ''केवल तितलियां

....। क्या यह एक तितली थी।

उसे बड़ा अजीब सा लग रहा था। क्या उस तितली की आंखों में उसकी प्रिय पीलू की चमक थी? उसे इस बात पर बिल्कुल भी यकीन नहीं हो रहा था। उसके अंदर की उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। वो अब खुश था।

शायद उसे अब यहां से मुक्ति मिल जाए? जैसे–जैसे मुक्ति की संभावना सच होती नज़र आई, वैसे–वैसे उसे लगा कि उसे पलायन नहीं करना चाहिए। पीलू तितली की आंखों का प्यार उसने देखा था। उसे लगा कि वो उसके काबिल नहीं है। वो खुद को बदलना चाहता था। वो अपनी गलतियों को सुधारना चाहता था। उसने तितली को अपने दिल की बात बताने की कोशिश की। उसने अब संघर्ष करना बंद कर दिया।

वो मुड़ कर मीनार के नीचे उतरने लगा। वो अब हरेक इल्ली की आंखों में झांक कर देखता। वो इल्लियों की विविधताओं को देखकर दंग रह गया। इस सुंदरता को उसने पहले कभी क्यों नहीं निहारा? वो हरेक इल्ली के कान में एक बात कहता, ''मैं चोटी से लौट कर आ रहा हूं। वहां पर कुछ भी नहीं है।''

ज़्यादातर इल्लियां उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देतीं। वे बस ऊपर ही चढ़ती जातीं।

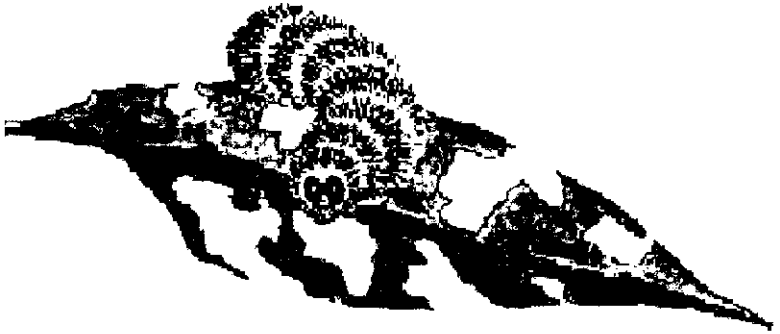

एक ने कहा, ''ये कोई हारा हुआ खिलाड़ी मालूम पड़ता है। फेल हो गया लगता है।''

पर कुछ इल्लियों को उसकी बात सुनकर गहरा धक्का लगता। वो चढ़ना बंद कर देतीं। एक ने दर्द भरे स्वर में कहा, ''अगर यह सच भी है तो भी इसे किसी को मत बताओ। भला इल्लियां इसके अलावा और कर भी क्या सकती हैं?''

पट्टू के उत्तरों से सभी आश्चर्यचकित थे। वो खुद भी।

''हम उड़ सकते हैं! हम तितलियां बन सकते हैं! मीनार की चोटी पर तो कुछ भी नहीं है!''

उसे अब अपनी गलती समझ में आ रही थी। ऊपर पहुंचने के लिए उसे उड़ना चाहिए था, चढ़ना नहीं। जब किसी इल्ली को तितली बनने की संभावना समझ में आती तो वो खुशी से झूम उठती।

उसे कई इल्लियों की आंखों में भय दिखाई दिया। इस खुशखबरी को उनके लिए पचा पाना कठिन था। मीनार के रहस्य का पर्दाफाश हो चुका था। इल्लियां दुविधा में थीं। नीचे का रास्ता काफी लंबा और कष्टों से भरा था।

एक इल्ली ने शंका जताई, ''हम कैसे मान लें तुम्हारी बात। इल्लियों की ज़िंदगी तो ज़मीन से जुड़ी है! हम कीड़ें हैं! हमारे अंदर कहां से

आएगी तितली! हमें माफ करो! हमें हमारी ज़िंदगी जीने दो!''

पट्टू भी अपने सोच पर संदेह करने लगा था। ''इस सबका मेरे पास सबूत क्या है?''

वो नीचे उतर रहा था। उसकी निगाहों में हसरत भरा अंदाज़ था। वो कह रहा था ''मैंने तितली देखी है – ज़िंदगी में बड़ी संभावनाएं हैं।''

एक दिन वो नीचे उतर आया।

वो थका था। वो उस जगह पर गया जहां कभी वो और पीलू घूमते थे। उसे वहां पीलू नहीं मिली। उसमें आगे चलने की ताकत भी नहीं बची थी। वो वहीं दुबक कर सो गया। उठने पर उसने एक पीली तितली को पंखा झलते हुए पाया।

''क्या मैं कोई सपना तो नहीं देख रहा हूं?'' उसने सोचा।

चलते–चलते वो एक टहनी के पास आए। टहनी से दो थैले जैसे लटके थे। तितली, थैली में अपना सिर और पैर घुसाने की कोशिश करती और फिर पट्टू को आकर छूती। शायद वो कुछ कहना चाहती

थी। तितली अपने तार जैसे तंतुओं को हिलाती जैसे कि वो कुछ कह रही हो।

पट्टू को तितली के शब्द तो समझ में नहीं आए परंतु वो उसकी बात को धीरे–धीरे समझ गया...।

.....उसे क्या करना है? इसका आभास उसे हो गया।

पट्टू हल्के–हल्के टहनी पर चढ़ा। अंधेरा हो चुका था और उसे डर लग रहा था। अंत में उसने रेशम के धागों से अपना कोवा बुना।

पीलू यह सब देखती रही और इंतज़ार करती रही।

अंत में एक दिन.....

उसमें से एक धारियों वाली तितली निकली।

यह अंत नहीं एक नई ज़िंदगी की शुरुआत थी।

❐❐❐